रिकॉर्डः– इस पाप की दुनिया..... ''ऊँ'' पिताश्री 22/8/1965

ओम शान्ति। मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना। यह गीत आदि ड्रामा अनुसार पहले से ही बने हुए हैं। गीत ना सुनावे तो भी कोई हर्जा नहीं। बच्चों की मंजिल से लागू रखता है, किसको तो याद करते हैं ना। इस पाप की दुनिया से... इनको पतित, भ्रष्टाचारी, पाप आत्माओं की दुनिया भी कहते हैं। गीत तो गाते हैं; परन्तु यह किसको पता नहीं है कि पाप की दुनिया, पुण्य की दुनिया किसको क(हा) जाता है। कहते हैं, पाप की दुनिया से ले चल जहाँ शान्ति और सुख हो। इस पतित दुनिया में बहुत दुख है। यही भारत पुण्य आत्माओं की दुनिया थी। भारत ही स्वर्ग था, भारत ही अब नर्क है। ऐसे नहीं कहेंगे, यूरोप हेविन था। यूरोप हेल है। नहीं। वो भी मानते हैं हेविनली गॉड फादर है। इस समय है हेल, जिसको डेविल वर्ल्ड कहते हैं। यह भी जानते हैं, डीटी वर्ल्ड पैराडाइज़ था; परन्तु कब था, यह नहीं जानते; क्योंकि शास्त्रों में लाखों वर्ष लिख दिया है। अभी थोड़ा–2 समझते जाते हैं कि क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। तुम बच्चे जानते हो, भारत ही स्वर्ग था। और कोई धर्म नहीं था। वो इस्लामी, बौद्धी आदि तो पीछे आए हैं। वो तो ऐसे ही दुके(तुक्के) लगाते रहते हैं भारत स्वर्ग था तो वहाँ पवित्रता–सुख–शान्ति सब था। सन्यासी लोग तो सम्पत्ति को मानते नहीं। इसलिए घरबार छोड़ जाते हैं। उनको भी गोल्डन ... सिलवर... एज में आना है। अभी वो तमोप्रधान हैं। बड़े–2 फ्लैट लेकर बैठे हैं। गवर्मेन्ट भी कहते हैं, उन्होंने घरबार छोड़ा है; परन्तु कौन कहता है। अभी वो भी बड़े–2 मंदिर आदि बनाते रहते। गवर्मेन्ट भी मदद करती रहती। यहाँ मनुष्य भूख मरते रहते और वो लोग फालतू यह सब बनाते रहते। गवर्मेन्ट ना रीलिजस है, ना इररीलिजस है। जो ना पुरुष, ना स्त्री होते हैं उनको क्या कहा जाता है? यह भी ऐसे है। ड्रामा अनुसार ऐसा बनना ही है। रिलीजन के लिए अच्छे–2 प्रबंध करते हैं, मंदिर बनाते हैं। तो रिलीजस नहीं कहेंगे। प०पि०प० को भी पुकारते रहते हैं, सन्यासी भी कहते हैं– शांति दो। अभी तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो पुण्य आत्माओं की दुनिया का। (इसलिए) पहले–2 तुमको ज्ञान मिला है। जानते हो, शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की रचना रचते हैं। बाबा कहते हैं, तुम जीव आत्माओं को शूद्र वर्ण से अब ब्राह्मण वर्ण में लाया है। शूद्र से अब तुम ब्राह्मण ब्रह्मा के मुखवंशावली बनते हो। क्यों? बाप से वर्सा लेने। ब्रह्मा मुखवंशावली सिर्फ संगम पर ही बनते हैं। तुम्हारे लिए अभी संगम है। तुम कहते हो, हम आत्मा सो पावन थे। अभी पतित बने हैं। फिर सो पावन बनें। हे पतित–पावन, बाबा, हमको फिर से पावन बनाओ। ऐसी–2 अपन से बातें करो। अभी आत्मा को खुराक मिली है। हम आत्माएँ पावन थीं। मुक्तिधाम में रहती थीं। फिर स्वर्ग में आए इतने जन्म लिए। फिर नीचे गिरते गए। अब फिर गोल्डन एज में जा(ना) है। बाप कहते हैं, 5000 वर्ष पहले भी तुमको कहा था, माम् एकम् याद करो। गृहस्थ व्यवहार, धंधे आदि में रहते सिर्फ अपन को समझो, हमको अब पावन बनना है। घर जाना है। पावन दुनिया का मालिक बनना है। अब आयरन एज से हम गोल्डन एज में कैसे जावें– यह चिंता लगी रहे। बाप भी युक्ति से बतलाते हैं कि माम् एकम् याद करो तो तुम पावन बनोगे। गीता में भी दो बारी यही महावाक्य हैं मनमनाभव... हे बच्चे, देह–अभिमान छोड़ो। बाप को याद करो। वो है अथॉर्टी। तुमको सभी शास्त्रों का सार, सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का नॉलेज समझाया है। अब भक्ति पूरी हुई। तुमको ज्ञान मिल रहा है। जितना तुम मुझे याद करेंगे उतनी तुम्हारी आत्मा प्युअर होती जावेगी। और कोई उपाय नहीं। पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बनना है। गंगा स्नान से तो पावन नहीं बनेंगे। अगर बनते तो फिर यहाँ होते ही नहीं; परन्तु नहीं, आयरन एज में सबको आना ही है। तो पहले सवेरे–2 इसी खयालात में बैठना है। कहते हैं ना– राम सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा कहती हैं– हे मेरी बुद्धि, अब बाप को याद करो। बुद्धि का योग बाप से लगाना है। अब जितना जो लगावेंगे उतना पत्थर से पारस बुद्धि बन जावेंगे। पारस बुद्धि बनाने वाला बाप ही है। कहते हैं, कल्प–2 संगमयुग पर आए तुमको बताता हूँ। सेकण्ड की बात है। जैसे तु(म) लोग ऐसी–2 दवाई देते हैं जो फोड़ा अन्दर ही खतम हो जाता है। बाप कहते हैं

(अधूरी मुरली)